'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) – 3.009, (GIF) –0.676 (2013)
Vol. 3, Issue-4
ISSN : 2348-7143
Oct-Nov-Dec 2017

'अंधेर नगरी' : प्रतीकात्मकता एवं युगबोध

डॉ. अमोल दंडवते
सहायक प्राध्यापक
रूख्मिणीताई कला एवं वाणिज्य
महिला महाविद्यालय, अमलनेर जि. जलगॉव 425401
मो. 9421535255
E mail : amol.navgeet@gmail.com

भारतेन्दु का 'अन्धेर नगरी' प्रहसन तत्कालिन व्यवस्था एवं सामाजिक परिवेश का दर्पण है। देश प्रेम, राष्ट्रीय जागरण तथा सामाजिक सुधार की चेतना उनके नाटकों में दिखाई देती है। उनके नाटकों में व्यंग्य के माध्यम से मनुष्य को अपनी; अपने देश और समाज की सही तस्वीर से अवगत कराकर उसे बदलने के लिए प्रेरणा देते है। सत्ता लोलुपता, लोभवृत्ति और अंधी व्यवस्था को प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देने में भारतेन्दु सफल रहे है। राजा को फांसी पर चढ़ाकर ब्रिटिशों के प्रति भारतीय जनता का आकोश प्रतीक के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

भारतेन्दु अपने समय के एक सशक्त नाटककार रहे हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य की कई विधाओं को जन्म ही नहीं दिया बल्कि उस विधा को पुष्ट भी किया। भारतेन्दु का उदय जिस युग में हुआ, वह युग भारतीय परतंत्रता तथा अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के आर्थिक शोषण का युग रहा। भारतेन्दु दो ऐतिहासिक युगों के सन्धि–स्थल पर खड़े थे, इसिलिए उनका ध्यान प्राचीन और नविन दोनों की ओर गया। भारतेन्दु ने 'वैदिकी हिंसा – हिंसा न भवति', 'चन्द्रावली', 'नीलदेवी', 'भारत दूर्दशा', 'अंधेर नगरी', 'विद्यासुन्दर', 'भारत जननी', 'मुद्रा राक्षस' जैसे कई मौलिक रुपान्तरित, अनूदित, प्रहसन, नाटक, नाट्य रासक लिखें।

भारतेन्दु का ***'अन्धेर नगरी'*** प्रहसन तत्कालिन व्यवस्था एवं सामाजिक परिवेश का दर्पण है। इस प्रहसन का पूर्ण नाम 'अन्धेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा' है। प्रहसन की रचना सन् 1881 ई. को हुई। छः अंकों में विभाजित यह प्रहसन गद्य–पद्य के समन्वित रूप में लिखा गया है। कहा जाता हैं कि बिहार प्रान्त के किसी जमींदार के अन्यायों को लक्ष्य करके उसको सुधारने के लिए इसकी रचना की गई। यह अंग्रेजों के शासन की कुव्यवस्था पर भी व्यंग्य करता है। नाटक विधा को भारतेन्दु ने तत्कालीन देश और देश की राजनीतिक–सामाजिक स्थिति का ध्यान रखा है। यह युगचेतना उनके 'अन्धेर नगरी' में दिखाई देती है। सामाजिक कुरीतियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य 'अंधेर नगरी' में दिखाई देता है।–

''टके के वास्ते धर्म्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचैं, टके के वास्ते झूठी गवाही दे।
टके के वास्ते पाप का पुण्य मानैं, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावैं।'' [1]

समाजिक व्यवस्था कितनी बिगड़ गयी थी, यह इन पंक्ति से समझ में आ सकता है। देश प्रेम और अपनी पराधीनता से मुक्ति के प्रयास के साथ–साथ भारत की राजकीय अंग्रेजी व्यवस्था पर प्रहार करने में वे पीछे नहीं रहे है। 'अन्धेर नगरी' के प्रहसन में चौपट्ट न्याय की कथा लोक–जीवन में प्रचलित कथा का आधार ग्रहण कर भारतेन्दु ने अंग्रेज नौकरशाही पर प्रहार किया है। धुर्त, कपटी, स्वार्थी अंग्रेजों पर व्यंग्य करते हुए वे कहते है –

''भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहिं अमले अरु प्यारे।
अन्धाधुन्ध मच्यौ सब देसा। मानहुँ राजा रहत विदेसा।। [2]

इस देश की प्रजा आज पीड़ित है तो इसलिए कि रानी विक्टोरिया सात समुद्र पार से राज्य चला रही है और उसकी नौकरशाही देश में मनमानी कर रही है। तो दूसरी ओर सर्वत्र फूट और बैर भाव की स्थिति है। भारतेन्दु ने अपने युगबोध की गहन अभिव्यक्ति इन नाटकों के माध्यम से की है। प्रजातंत्र, मौलिक अधिकार,

उच्चादर्श की बात करनेवाले अंग्रेज भोलीभाली जनता को लूट रहे थे। अंग्रेजों के कथनी और करनी में स्पष्ट अंतर दिखाई दे रहा था। भारतेन्दु ने वर्तमान युग की समस्याओं को पहचाना। यहीं कारण है कि, 'अन्धेर नगरी' आज भी प्रासंगिक लगता है। वह नाट्य धर्मिता की पहचान कराने वाला प्रथम नाटक है। इस संदर्भ में समीक्षक कहते है कि, '' भारतेन्दु ने जहॉ एक ओर परम्परागत नाटक की शास्त्रीय जड़ता को तोड़ा , वहॉ दूसरी ओर इसे सस्ते और फूहड़ मनोरंजन की व्यावसायिकता से बचाकर जनवादी स्वरूप दिया। भारतेन्दु हिन्दी नाटक के विकास को सही दिशा देने वाले प्रथम प्रकाश–स्तम्भ हैं। उनके 'अन्धेर नगरी' नाटक को नाट्य धर्मिता की पहचान कराने वाला प्रथम नाटक कहा जा सकता है।'' [3]

'अन्धेर नगरी' एक ऐसा व्यंग्य प्रहसन है जिसकी सार्थकता और मूल्यवत्ता समय के साथ बढ़ती ही गयी है। भारतेन्दु ने केवल मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि, यह अन्धेर गर्दी को खत्म करने के लिए प्रहसन लिखा। भारतीय जनता की प्रबल इच्छा का यह नाटक है। प्रतीक और व्यंग्य के संदर्भ में समीक्षक कहते है कि, ''इस कथावस्तु के माध्यम से भारतेन्दु ने सामयिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था–अनीति, भ्रष्टाचार, विवेकहीनता और लाभवृत्ति पर व्यंग्य किया है। बाज़ार में कुॅजड़िन, चूरन विक्रेता आदि के कथनों में भारतीय समाज की बुराइयों और विदेशी सत्ता पर व्यंग्य है।'' [4]

भारतेन्दु ने 'अन्धेर नगरी' और उनका दूसरा नाटक 'भारत दूर्दशा' का शीर्षक मात्र केवल हास्य–व्यंग्य के लिए नहीं दिया बल्कि उसके पीछे छिपा प्रतीकात्मक उद्येश्य भी है। अंधेर नगरी में अंधेर है तो, उसके पिछे राजा का चौपट राजकाज भी कारण है। और भारत की दूर्दशा भी क्यों हुई, क्या कारण है? इस पर 'अंधेर नगरी' प्रकाश ड़ालता है। शीर्षक के पीछे तीव्र व्यंग्य भी है। जो यथार्थता, युगबोध और इतिहास को प्रतिबिम्बित करता है। समीक्षक 'अंधेर नगरी' के संदर्भ में कहते है कि,''प्राचीनता–नवीनता के निष्कर्ष पर उन्होंने सोद्देश्य हास्य के आकलन हेतु प्रहसन पध्दति अपनाकर राजनीतिक, समाजिक, पारिवारिक विषमताओं और भारतीयों की आर्थिक दुरावस्थाओं पर व्यंग्य किया है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 'अंधेर नगरी' है।'' [5] वर्तमान जीवन की असंगतियों, विकृतियों, आडम्बरों, अमानवीयता, शोषण, का सही चित्रण 'अंधेर नगरी' है। उनके 'भारत दूर्दशा' में राजकीय प्रबन्ध व्यवस्था पर करारा व्यंग्य था तो 'अन्धेर नगरी' प्रहसन में राजकीय न्याय व्यवस्था पर चोट की गई थी। इसमें ब्रिटिश सत्ता की प्रबन्ध व्यवस्था पर कटाक्ष किया गया है। –

''चना हाकिम सब जो खाते
सब पर दूना टिकस लगाते।।'' [6]

'अंधेर नगरी' प्रतीकात्मक प्रहसन है। महन्त जी के दो चेले नगर में दो भिन्न द्वारों से प्रवेश करते हैं। गोबर्धनदास जिसका अर्थ मनोवृत्ति पर आधारित है। गोबर धन दास अर्थात् वह मूर्ख भी और धन का दास भी। एक प्रकार से पश्चिमी द्वार से उसका प्रवेश अर्थात् पश्चिमी सभ्यता का प्रतीक मान सकते है। जो लोभ में पड़ने को विवश हो जाता है। जो पाश्चात्य भौतिकता का प्रतिनिधि पात्र लगता है। तो दूसरी ओंर पूर्व द्वार से प्रवेश करनेवाला महंत का दूसरा चेला नारायणदास भारतीयता का पौर्वात्य का प्रतीक पात्र लगता है। जो भारतीय संस्कृति की रक्षा करनेवाला दिखाया है। जिस अन्धेर नगरी का मूर्ख राजा है, वहॉ व्यवस्था सुचारू रूप से चल ही नहीं सकती। इस प्रहसन का उद्येश्य ही मूर्ख राजा की राजव्यवस्था से लोगों को अवगत कराना है। ऐसे उदाहरण विश्व के कई देशों में तानाशाह राजा के रूप में और अव्यवस्था के प्रतीक बन गये है। जो आज भी प्रासंगिक लगते है। भारतेन्दु ने 'नेशनल थियेटर' में अभिनेयार्थ इस प्रहसन को एक ही दिन में लिखकर समाप्त कर दिया था। देश प्रेम, राष्ट्रीय जागरण तथा सामाजिक सुधार की चेतना उनके नाटकों में दिखाई देती है। उनके नाटकों में व्यंग्य के माध्यम से मनुष्य को अपनी अपने देश और समाज की सही तस्वीर से अवगत कराकर उसे बदलने के लिए प्रेरणा देते है। भारतेन्दु की सामाजिकता के संदर्भ में समीक्षक कहते है कि, ''भारतेन्दु की सामाजिकता राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित है और इस चेतना में उन विकृतियों का बहिष्कार है जो भारत को पराधीन बनाए थीं। उल्लेखनीय है कि भारतेन्दु

की सामाजिकता का पर्यावसान सांस्कृतिक गरिमा में नहीं, राष्ट्रीयता के स्वाभिमान में होता है।'' [7] अंधेर नगरी किसे कहते है; इसका उत्तर प्रहसन के अंत में स्वयं गुरू महंत देते है। जो आज के युग में प्रासंगिक लगता है। –

''जहॉ न धर्म न बुध्दि नाह नीति न सुजन समाज।
ते ऐसेहि आपुहि नसैं, जैसे चौपट राज।।'' [8]

'अंधेर नगरी' की विशेषता यह है कि, वह अत्यंत मनोरंजक, प्रभावोत्पादक और रसपूर्ण है। 'बाज़ार दृश्य' और 'दरबार दृश्य' इस प्रहसन के अमूल्य महत्वपूर्ण नाटकीय दृश्य बन पड़े हैं। इन्हीं दो दृश्यों में सामाजिक–राजनीतिक चेतना के स्वर मुखर हो उठते है। न्याय के संदर्भ में खोखली, झूठी, लम्बी, ठगनेवाली प्रक्रिया का अन्याय पूर्ण क्रम दिखाई देता है। प्रहसन में पहले प्यादे का संवाद देश की तत्कालिन अव्यवस्था के बारे में सटीक बन पड़ा है। वह गोबर्ध्दनदास को पकड़कर कहता है कि,''क्योंकि बकरी मारने के अपराध में किसी न किसी को सजा होनी ज़रूर है, नही तो न्याव (न्याय) न होगा।'' [9] 'अन्धेर नगरी' यद्यपि कल्पित नगर है, पर वह यथार्थ में ब्रिटिश कालीन भारत का प्रतीक है। 'अंधेर नगरी' का राजा विवकहीनता का और न्याय शून्यता का प्रतीक है। मंत्रीगण चापलूसी के प्रतीक है। महंत विवेकता और त्याग, साधना का, नारायणदास भारतीयता का, गोवर्ध्दनदास लोभ, मोह, भौतिकवाद और पश्चिमी सभ्यता का प्रतीक है। वहीं फरीयादी 'अंधेर नगरी' की भोली एवं निर्धन जनता का प्रतीक हैं। 'अंधेर नगरी' अव्यवस्था, अन्याय, अवसरवादी अंग्रेजों की तानाशाही का प्रतीक है। प्रहसन में आया संवाद सब कुछ बयान कर देता है।–''और फिर इस राज में साधू–महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इससे तुम्हीं को फॉसी देंगे।'' [10] भोली जनता को फांसी पर चढ़ाना अंग्रेजों के अंधे न्याय व्यवस्था का प्रतीक है। अंत में महंत बुध्दि चातुर्य से राजा को ही फांसी पर चढ़ाकर अंध व्यवस्था को मिटाने की कोशीश करता है। सत्ता लोलुपता, लोभवृत्ति और अंधी व्यवस्था को प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देने में भारतेन्दु सफल रहे है। राजा का फांसी पर चढ़ जाना एक प्रकार से ब्रिटिश कुशासन का अंत ही है।

खाने के वस्तु के मूल्य अर्थात् 'टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' लोभ के प्रतीक है। महंत के दोनों चेलों को दी गई चेतावनी यही स्पष्ट करती है, कि ऐसी नगरी के अर्थात् अंग्रेजों के लोभ मोह के साजो–सामान में भारतीय जनता को पड़ना नहीं चाहिए। भारतेन्दु कहते है –

''चूरन साहब लोग जो खाता। सारा हिन्द हजम कर जाता।।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।।'' [11]

क्योंकि 'लोभ' स्वातंत्र्य की नहीं पारतंत्र्य की चीज है। गले के नाप का फांसी का फंदा भी अंग्रेजों के अंधे राजकाज का प्रतीक है। महंत शिष्य गोबर्ध्दनदास कहते है कि,

''बच्चा बहुत लोभ मत करना। देखना हां।
लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ कभी नहिं कीजिए, यामैं नरक निदान।।''[12]

कथानक में भी गति है तथा मोड़ भी है। इस प्रहसन में महंत का चेलों को लोभ में न पड़ने का संकेत ही कथा को नयी दिशा और विकास देता है। अपने युगबोध की इतनी गहन अभिव्यक्ति जिस सर्जनात्मक उर्जा से की गई है, वह भारतेन्दु जैसे क्रांतद्रष्टा नाटककार से ही संभव थी।

शिल्प की दृष्टि से देखे तो खड़ी बोली और ब्रज भाषा का समन्वित प्रयोग नवीन तेवर के साथ प्राप्त होता है। कथानक की रोचकता एवं प्रवाह के संदर्भ में समीक्षक कहते है कि, '''अंधेर नगरी', जिसमें व्यवस्था और बौध्दिक चेतना पर करारा व्यंग्य उकेरा गया है जो कथानक को रोचकता एवं प्रवाह प्रदान करता है।'' [13] व्यंग्य मिश्रित हास्य रस के माध्यम से गतिशिल नाटकीयता प्रदान की है। इस संदर्भ में समीक्षक कहते कि, ''इस नाटक के संवादों की भाषा बहुत सरल, सहज और पात्रानुकूल है। भारतेन्दु ने खड़ी बोली और ब्रज भाषा का नया समन्वित प्रयोग करके भारत को जीवंत नाटकीय स्वरूप दिया है।

उनकी भाषा में व्यंग्य की अद्‌भुत क्षमता है।'' [14] 'अंधेर नगरी' शीर्षक इतना व्यापक है कि लोग वर्तमान समय में भी इसे मूहावरे की तरह प्रयोग करते है। साधारण से कथानक को असाधारण बनाना भारतेन्दु का वैशिष्ट्य है। नाटक में गद्य और पद्य का मिला–जुला प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, 'अंधेर नगरी' प्रहसन केवल न्याय–अन्याय का विवके नहीं है बल्कि, तत्कालीन भारतीय समाज, ब्रिटिश शासन के प्रति तीखा व्यंग्य भी हैं। राजा को फांसी पर चढ़ाकर ब्रिटिशों के प्रति भारतीय जनता का आक्रोश प्रतीक के माध्यम से व्यक्त हुआ है। वह तत्कालीन व्यवस्था एवं सामाजिक परिवेश का दर्पण है।

———

संदर्भ संकेत :

1. 'अंधेर नगरी' (प्रहसन) – भारतेन्दु पृ. 53, द्वि. सं., 1999, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर राजस्थान
2. वहीं. पृ. 70
3. आज का हिन्दी नाटक रंगमंच – डॉ. परमलाल गुप्त पृ. 25 प्र.सं. 1997, नई कहानी प्रकाशन, इलाहाबाद
4. वहीं. पृ. 26
5. मधुमती पत्रिका – सं. डॉ. अजित गुप्ता , अंक 9, वर्ष 46, सिंतबर 2006 पृ. 19–20 डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ की समीक्षा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, राजस्थान
6. 'अंधेर नगरी' (प्रहसन) – भारतेन्दु पृ. 50, द्वि. सं., 1999, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर राजस्थान
7. मधुमती पत्रिका – सं. डॉ. अजित गुप्ता , अंक 8, वर्ष 46, अगस्त, 2006 पृ. 21 डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ की समीक्षा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, राजस्थान
8. 'अंधेर नगरी' (प्रहसन) – भारतेन्दु पृ. 78, द्वि. सं., 1999, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर राजस्थान
9. वहीं. पृ. 72
10. वहीं. पृ. 78
11. वहीं. पृ. 52–53
12. वहीं. पृ. 46
13. मधुमती पत्रिका – सं. डॉ. अजित गुप्ता , अंक 9, वर्ष 46, सिंतबर 2006 पृ. 23 राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, राजस्थान
14. आज का हिन्दी नाटक रंगमंच – डॉ. परमलाल गुप्त पृ. 26 प्र.सं. 1997, नई कहानी प्रकाशन, इलाहाबाद